इमर्जेंट साक्षरता

Early Literacy Initiative
Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief (16)
2019

Supported by
TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

इमर्जेंट साक्षरता

शब्दचित्र 1:[1]

अगस्त महीने में हर सामान्य सुबह की तरह कक्षा 1 के विद्यार्थी उत्साहित और उतावले होकर बाहर खड़े हैं। शिक्षिका ने तकरीबन कमरा तैयार कर लिया है। कक्षा को अक्षरों के चार्ट, कविताओं, स्टोरी कार्ड और कार्य सूची चार्ट से सजाया गया है।

शिक्षिका, 'लिखने का कोना' में विभिन्न प्रकार के कागज़, रंगों तथा अन्य स्टेशनरी की चीज़ों के डिब्बों को सेट करती है। जब यह सब तैयार हो जाता है तब वह बच्चों को अंदर आने के लिए कहती है।

शिक्षिका: सायमा क्या तुम आज हमें बैग का कोना दिखाओगी?

सायमा कमरे में सामने बाईं ओर चलकर दीवार पर लगे लेबल के शब्दों पर अपनी उंगलियाँ फिराती हुई पढ़ती है।

सायमा: बैग का कोना ।

शिक्षिका: बहुत बढ़िया!

बच्चे अपने बैग को बैग कॉर्नर में रखते हैं। फिर गोल घेरे में बैठ जाते हैं। सभी बच्चों के गोले में बैठने के बाद शिक्षिका पूछती है, "हमें दूसरे कोनों के बारे में कौन बताएगा?"
कई बच्चे हाथ उठाते हैं।
जैसे ही शिक्षिका उनका नाम बोलती है बच्चे उठते हैं, कक्षा में विभिन्न कोनों तक चलकर जाते हैं।

दीवार के प्रत्येक कोने पर बच्चों के आंखों के स्तर के स्तर पर लेबल लगा है जो कोने का नाम बताता है।

[1] यह उदाहरण Organization for Early Literacy Promotion, Ajmer से प्रेरित और अनुकूलित है.

बच्चे लिखे हुए पर अपनी उंगली फेरते हैं और पढ़ते हैं।

पहला छात्र: कविता का कोना ।

दूसरा छात्र: लिखने का कोना।

तीसरा छात्र: कहानी कोना।

शिक्षिका: कहानी कोना?

बच्चा फिर से लेबल को देखता है और फुसफुसाता है ,"कहानी कोना |"

शिक्षिका उसके चारों ओर घूमती है, लटकती हुई किताबों में से एक किताब उठाती है, दोहराती है, “कहानी कोना?”

बच्चा इशारा समझता है, लेबल को देखता है ,और जवाब देता है, “किताबों का कोना, किताबों का कोना !”और फिर उसका हाथ शब्दों पर फेरता है।

छात्रों का यह समूह अभी 1 महीने से कक्षा 1 के सदस्य है। यह भारत के निम्न साक्षर समुदाय से संबंध रखते हैं, जहां अधिकांश बच्चे प्री स्कूल में नहीं जाते और ना ही प्रिंट समृद्ध वातावरण से आते हैं। जो कुछ भी हमने पढ़ा है यह उनके स्कूल में सुबह होने वाली गतिविधि का वर्णन करता है।

इमर्जेंट लिटरेसी का परिप्रेक्ष्य

बच्चों के साक्षर होने की शुरुआत कब होती है ? अगर हम आपसे यह प्रश्न पूछें तो आप शायद उस समय को सोच सकते हैं जब आपने पढ़ना और लिखना सीखा था या आप अपने छात्रों के बारे में सोच कर कह सकते हैं- “3 साल 7 साल या 5 साल में।” इसके विपरीत इमर्जेंट लिटरेसी परिप्रेक्ष्य से पता चलता है कि प्रिंट



चित्र 1 . चार माह के बच्चे का पढ़ता हुआ चित्र . सौजन्य से: शैलजा मेनन

की पर्याप्त एवं सहज उपलब्धता के साथ बच्चे जन्म से ही पढ़ना और लिखना शुरु कर सकते हैं। यह कैसे हो सकता है? एक नवजात बच्चा जो एक पेंसिल भी नहीं पकड़ सकता है, चार महीने का बच्चा *अक्षरों* को नहीं जानता है | हालाँकि इमर्जेंट लिटरेसी का परिप्रेक्ष्य पढ़ना-लिखना सीखने के क्या मायने है इस सम्बन्ध में हमारी समझ को विस्तार देता है।

इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार पढ़ना और लिखना सीखना अक्षर सीखने व शब्दों की सही वर्तनी जानने से कहीं अधिक है। हम इनकी बारीकियां सीखने से पहले प्रिंट के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। एक बच्ची जिसका घर किताबों तथा प्रिंट से समृद्ध है, वह बहुत छोटी उम्र में ही सीख जाती है कि उसके आसपास के लोगों के लिए प्रिंट के कुछ मायने है। हो सकता है वह हर सुबह अपने दादा को अखबार पढ़ते हुए देखे। वह अपने पिता को एक फॉर्म भरते हुए या अस्पताल का रिपोर्ट पढ़ते देख सकती है। वह अपनी माँ को बस नंबर पढ़ते हुए या पत्र लिखते हुए या पैसे गिनते हुए देख सकती है। अगर वह ऐसे वातावरण में हो जहाँ बच्चों की किताबें उपलब्ध हो तो वह उन किताबों को पकड़ना सीख सकती है तथा जब कोई उसे पढ़कर सुना रहा हो तो वह तस्वीरों को गौर से देख सकती है और बाद में उन्हें खुद पढ़ सकती है (चित्र 1 देखें)

> मैरी क्ले, न्यूज़ीलैंड की जानी-मानी शिक्षाविद, जिन्होंने एमर्जेंट लिटरेसी शब्द गढ़ा था, ने इसे पढ़ने और लिखने के बारे में उस कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है जो बच्चों में परंपरागत पाठक और लेखक बनने के पूर्व विकसित होते हैं ।

इमर्जेंट लिटरेसी के परिप्रेक्ष्य की धारणाएँ

इमर्जेंट लिटरेसी के परिप्रेक्ष्य की बच्चों के साक्षर बनने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण धारणाएं हैं :

1. छोटे बच्चे साक्षरता के कार्यों को वास्तविक जीवन में जहाँ पढ़ने और लिखने का उपयोग किया जाता है, अवलोकन कर एवं उसमें भाग लेकर सीखते हैं ।
2. इसके लिए सार्थक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है।
3. इसमें दूसरों के साथ अर्थपूर्ण बातचीत भी शामिल है।
4. ऐसा नहीं है कि छोटे बच्चे पहले पढ़ना सीखते हैं और बाद में लिखना; बल्कि वे पढ़ना लिखना दोनों के बारे में एक साथ सीखते हैं तथा एक में विकास दूसरे को सहारा देता है।
5. यह क्षमताएं उनकी मौखिक भाषा से जुड़ी हुई हैं।
6. पढ़ना और लिखना सीखना समय के साथ निरंतर होता है, करीब से देखने पर हम देखते हैं कि बच्चे पढ़ना और लिखना सीखने में कई विकासात्मक चरणों से गुजरते हैं।

निम्न साक्षर समुदायों-में इमर्जेंट लिटरेसी

इमर्जेंट लिटरेसी के क्षेत्र में अधिकतर काम उन पश्चिमी संस्कृतियों एवं मध्यम वर्ग में किया गया है जहाँ प्रिंट सामग्रियों की भरमार है।

हम इस धारणा से शुरू करते हैं कि सभी बच्चे, चाहे वे निम्न साक्षर समुदायों-के बच्चे ही क्यों न हों, सक्रीय अर्थ निर्माता होते हैं और वे अपने वातावरण में उपलब्ध प्रिंट सामग्रियों का अवलोकन करने एवं उनसे जुड़कर एवं संवाद करने के लिए स्वाभाविक तौर से प्रेरित होते हैं। इस प्रकार के जुड़ाव से वे उन चीज़ों को सीख लेते हैं जो परंपरागत साक्षरता की दिशा में आगे मदद करते हैं। इसमें यह समझ शामिल है कि भाषा और साक्षरता कैसे काम करती है। वे उस मौखिक भाषा से ज्ञान का निर्माण करते है जो वे घर से कक्षा में लाते हैं । वे प्रिंट सामग्रियों के कार्यों को सीखते हैं जैसे हम अपने दैनिक जीवन में -प्रिंट सामग्रियों का उपयोग क्यों करते हैं (उदाहरण के लिए, सड़क के संकेतों को पढ़ने के लिए, सूचियां बनाने के लिए, समाचार पत्रों और पुस्तकों को पढ़ने के लिए) ।वे प्रिंट सामग्रियों का सही उपयोग करने के लिए नियमों को सीख जाते हैं ; जैसे कई स्क्रिप्ट बाएं से दाएं, या ऊपर से नीचे लिखी जा सकती हैं।वे अपनी भाषा के ध्वनियों कें प्रति सतर्क होना सीख जाते हैं, जैसे कुछ शब्द - सुनने में दूसरे शब्दों की तरह लगते हैं (तुकांत या एक ही ध्वनि से शुरू होने वाले शब्द) । वे अक्षरों के बारे में सीख जाते हैं और ये भी सीख जाते हैं कि कैसे उन्हें एक साथ जोड़कर सार्थक शब्द और वाक्यों की रचना की जा सकती है। वे यह भी सीख सकते हैं कि उनके आड़ी -तिरछी रेखाएं खींचने के प्रारंभिक प्रयास उन्हें चित्रकला और लेखन की ओर ले जा सकती है। अभी प्रिंट सामग्रियों की दुनिया के बारे में जानने के लिए बहुत कुछ बाकि है!

हमनें इस सारपत्र में सभी पहलुओं को शामिल करने का प्रयास नहीं किया है बल्कि हम तीन प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे और आशा करते हैं कि यह आपको दूसरे पहलुओं की समझ को विस्तार देने में मदद करेंगे। हम आगे देखेंगे:

1. प्रिंट सामग्रियों के बारे में जागरूकता पैदा करना|
2. इमर्जेंट पठन के लिए अवसर उपलब्ध कराना|

3. इमर्जेंट लेखन के लिए अवसर उपलब्ध कराना|

प्रिंट सामग्रियों के बारे में जागरूकता पैदा करना

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, निम्न साक्षर समुदायों-के बच्चों को अपने घर या अपने परिवेश में प्रिंट सामग्रियां देखने का अवसर कम मिल पाता है अतः यह महत्वपूर्ण है कि उनके शिक्षक होने के नाते आप कक्षा में ऐसे अवसर उपलब्ध करवाएँ जिससे छात्र प्रिंट की अवधारणाओं को सीख सकें।

प्रिंट की अवधारणा

प्रिंट सामग्रियों से संबंधित विभिन्न प्रकार की समझ का वर्णन आगे किया गया है।

प्रिंट सामग्रियों का प्रासंगिकता समझना: विचार करें कि जब बच्चे स्कूलों में प्रवेश करते हैं तो आम तौर पर क्या होता है | उन्हें महीनों तक वर्णमाला रटवाई जाती है :शायद ही शिक्षक उनके लिए कभी पुस्तकें,कहानियां और कविताएँ पढ़ते हैं | ऐसी स्थिति में बच्चे पढ़ने और लिखने को सार्थक समझेंगे इसकी संभावना कम ही होती है –उन्हें शायद यह एहसास भी न हो कि जिन वर्णों या अक्षरों को वे सीख रहे हैं उनके जुड़ने से शब्द और वाक्यों की रचना होती हैं जिनसे कहानियाँ बनती हैं या अर्थपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं।

यहाँ एक शोधकर्ता और दूसरी कक्षा के बच्चे के बीच एक चित्र पुस्तक (पिक्चर बुक) के बारे में हुई बातचीत दी गयी है, जो कि मेनन एवं अन्य सहयोगियों (2017) द्वारा कर्नाटक के यादगीर में किए गए अध्ययन Literacy Research in Indian Languages (LiRIL) से शब्दशः लिया गया है।

शोधकर्ता यह क्या है" :(चित्र पुस्तक पकड़े हुए)?"

बच्चा :यह पढ़ने के लिए कॉपी है। (“कॉपी” शब्द नोटबुक के लिए बोलचाल का शब्द है ।)

शोधकर्ता : आपको इसके अन्दर क्या देखने को मिलेगा ?

बच्चा : शब्द।

शोधकर्ता: आप इन शब्दों के साथ क्या करेंगे?

बच्चा : उन्हें पढेंगे, फिर उन्हें अपनी कॉपी में उतारेंगे।

(सुब्रमण्यम, मेनन और सजीता, 2017, पृष्ठ 7 का अंश) ।

आप देख सकते हैं कि बच्चे को यह पता ही नहीं था कि पाठ में अर्थ, कहानी या कोई जानकारी भी हो सकती है। दूसरी ओर, जिन बच्चों को प्रिंट सामग्रियों की जागरूकता है वह जानते है कि पढ़ना-लिखना सीखना उनकी

बोली जाने वाली भाषा की ही तरह उन्हें अर्थ बताने/संप्रेषित करने में मदद करता है| वे यह भी जानते हैं कि प्रिंट का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है जैसे कि दूसरों के साथ बातचीत करना, जानकारी लिख कर रखना या आनंद और मनोरंजन के लिए पढ़ना।अतः बच्चों के लिए यह सीखना सबसे महत्वपूर्ण है कि प्रिंट के कुछ मायने होते हैं और इसका उनके जीवन से गहरा सम्बन्ध है।

प्रिंट की उपयोगिता पर समझ बनाना यह भी महत्वपूर्ण है कि छात्र यह सीखें कि पुस्तकों में निहित प्रिंट कैसे काम करती है उदाहरण के लिए -:

दिशात्मकता -सभी प्रिंट को एक विशेष दिशा में पढ़ा जाता हैं। अंग्रेज़ी और हिंदी में पढ़ने और लिखने की दिशा बायें से दायें है, जबकि उर्दू में यह दायें से बायें की ओर है। जब हम एक पंक्ति के अंत तक पहुँचते हैं, तो हम अगली पंक्ति की शुरुआत के लिए में वापस जाते हैं। छोटे बच्चों को यह दिखाएँ कि कैसे लिखा -पढ़ा जाता है , अन्यथा वे बेतरतीब क्रम में लिख या पढ़ सकते हैं।

किताबें कैसे काम करती हैं यह सीखना- विशेष रूप से निम्नसाक्षर घरों- वाले बच्चों को यह समझने में स्पष्ट सहायता की आवश्यकता हो सकती है कि किताबें कैसे काम करती हैं चित्र)2 देखें ।(इस समझ में यह बातें शामिल होंगी -:

- क़िताब के विभिन्न भागों को जानना (जैसे सामने, पीछे, मोड़ने वाली जगह spine) और ये जानना कि क़िताब को कैसे पकड़ना है (कहाँ से पढ़ना शुरू करना है और कैसे आगे बढ़ना है जानना।
- अंग्रेज़ी, हिंदी और कई अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तक के पन्नों को बायें से दायें एवं ऊपर से नीचे तक पढ़ा जाता है।
- पाठ के चित्र, चार्ट या अन्य ग्राफिक्स पाठ से सम्बंधित होते है। पुस्तक से अर्थ बनाने के लिए इन सभी तत्वों को देखना होगा।



चित्र 2. एक छोटा लड़का एक पुस्तक को उल्टा पकड़कर पलट रहा है, जो यह दर्शाता है कि इस बच्चे को पुस्तक के उपयोग की सीमित समझ है |छवि सौजन्य :Akhila pydah

शब्द की अवधारणा- जब हम बोलते हैं तो कई शब्दों को एक साथ मिला देते हैं। कई बच्चे इन समूहों को एक शब्द मान सकते हैं और उन्हें वैसे ही लिख सकते हैं। (एक छोटा बच्चा " मुझे नहीं खाना" को "मुझे *नइखाना*" लिख सकता है) । इसके विपरीत, बच्चे शब्दों के बीच विराम दिए बगैर अक्षर दर अक्षर भी पढ़ सकते हैं। इस तरह, वाक्य "मेरा नाम राम है" को "में-रा-ना-म-रा-म-है" पढ़ा जा सकता है। इस तरह अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाए बिना पढ़ने से बच्चे को समझाने में कठिनाई आ सकती है ।

लिखने की परिपाटी- लिखने की परिपाटी में विराम चिन्हों का बड़ा महत्व है । ये पाठ के अर्थ और अभियक्ति को प्रभावित करते हैं । उदाहरण के लिए यदि "क्या हुआ?" लिखा जाता है तो यह एक सामान्य जिज्ञासा को दर्शाता है; जबकि "क्या हुआ?!" सूचना की तत्काल आवश्यकता का संकेत हो सकता है।

प्रिंट सामग्रियों के स्वरूपों के बारे में जानना

प्रिंट सामग्री कई प्रकार के होते हैं : किताबें , पर्चे, चार्ट, लेबल और साइनेज, नोटिस, सूची, पत्र आदि। बच्चों को इन विभिन्न स्वरूपों के बनावट, उद्देश्य और तौर तरीक़ों को समझना होता है ताकि वे उनका प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।

प्रिंट रिच वातावरण के द्वारा प्रिंट जागरूकता पैदा करना

बच्चों को यह समझने में मदद करने के लिए कि" प्रिंट कैसे काम करता है " कक्षा में प्रिंट सामग्रियों से समृद्ध वातावरण निर्मित करना[2] एक तरीका है।



चित्र 3. चित्र शब्दकोश। सीता स्कूल, कर्नाटक



चित्र 4. शब्दों वाली दीवार। Organization for Early Literacy Promotion, राजस्थान

[2] प्रिंट के प्रकार और कक्षा में इन्हें उपयोग करने के विभिन्न तरीकों पर अधिक जानकारी के लिए ELI सारपत्र, *कक्षाकक्ष में प्रिंट समृद्ध वातावरण निर्मित करना* देखे. यह सारपत्र http://eli.tiss.edu/handouts-publications/ से प्राप्त की जा सकती है

इस सारपत्र की शुरुआत में प्रस्तुत शब्द चित्र में, हमने देखा कि कैसे छात्र अपनी कक्षा में लेबल के साथ सम्बन्ध बनाते हैं (जैसे कोने का लेबल पढ़ना) । वे समझ जाते हैं कि इसका कोई उद्देश्य है और यह विशेष तरीके से काम करता है। तालिका 1 में कक्षा में लगाने योग्य विभिन्न प्रिंट एवं उनके उपयोग या कार्य की सूची है ।

तालिका 1
प्रारंभिक भाषा कक्षा के माहौल को समृद्ध बनाने के लिए प्रिंट सामग्रियों के प्रकार

प्रिंट सामग्रियों के प्रकार
ऐसा प्रिंट जो वस्तुओं व जगहों के बारे में बताती देती हो - वे लेबल जो छात्रों को बताते हैं कि चीजें क्या हैं या चीजें कहां रखनी हैं:- 'ब्लैकबोर्ड', 'राइटिंग कॉर्नर'(लिखने का कोना), 'नोटबुक को रखने की जगह', आदि।
ऐसा प्रिंट जो, छात्रों को यह याद दिलाता है कि क्या करना है - निर्देशों के छोटे नोट, जैसे कि कक्षा के लिए नियम, दैनिक कार्य, प्रिंट जो छात्रों को किसी विशेष चीज़ या स्थान का उपयोग करने के तरीके को याद दिलाते हैं(उदाहरण : "कृपया किताबों को पढ़ने के बाद उन्हें वापस उसी जगह पर रखें" और "श .... आप पढ़ने के कोने में हैं ")
ऐसा प्रिंट जो छात्रों को जानकारी देता है - Alphabet / वर्णमाला चार्ट - नाम और सामान्य चीजों के चित्रों के साथ चित्र-शब्दकोश चार्ट (चित्र 3 देखें) - *Word walls* शब्दों वाली दीवारें*) जिनमें ऐसे* शब्दों के कार्ड हो जिनका बच्चे आमतौर पर उपयोग करते हो या जिन शब्दों से उनका अक्सर सामना होता हो (उदाहरण: अम्मा, माँ, बाबा, गाय, घर, पानी , किताब, आदि) आप चित्रों को भी रख सकते हैं ताकि बच्चे अधिक तेज़ी से शब्दों और चित्रों के बीच संबंध स्थापित कर सकें (चित्र 4 देखें) - बच्चों के नाम एक दीवार पर बड़े और बोल्ड / मोटे अक्षरों में प्रदर्शित हों - विवरण के साथ बच्चों की रचनाएँ (जैसे उनके चित्र, लेखन, कला आदि।)
ऐसा प्रिंट, जो छात्रों को उत्तर देने या योगदान देने के लिए बढ़ावा देता है - दैनिक उपस्थिति पत्र (चित्र 5 देखें) - साइन-अप शीट (जहां छात्र किसी कार्य के लिए साइन करते हैं) - कक्षा की कार्य योजना जिसे छात्रों के साथ दिन की योजनाओं पर चर्चा करने के लिए हर सुबह उपयोग किया जाता है। - साझा लेखन चार्ट[3] जो कि उन साझा अनुभवों का लेखा-जोखा है, जो शिक्षक बच्चों को रचना करने और लिखने में मदद करते हैं - हाल ही में छात्रों द्वारा पढ़े या सुने गए पाठ पर आधारित कविता चार्ट और कहानी पोस्टर; छात्रों को अपने दोस्तों के लिए ये पोस्टर "पढ़ना" पसंद होता है.

[3] साझा पठन के बारे में इस सारपत्र में बाद में विस्तार से चर्चा की गई है.

पढ़ने और लिखने के लिए जगह: पढ़ना-लिखना, और शब्द- अध्ययन का कोना[4]
ये कोने बच्चों को प्रिंट और साक्षर दुनिया को गहराई से जानने और उनके साथ जुड़ने में मदद करते हैं

- **रीडिंग कॉर्नर** या कक्षा पुस्तकालय , बच्चों की किताबों से भरी हुई जगह हैं ताकि छात्र अपनी पसंद की किताबों को उलट-पुलटकर देख सकें और उन्हें खुद से पढ़ सके।
- **राइटिंग कॉर्नर** (लिखने का कोना) एक ऐसा स्थान है जहाँ छात्र गोदागादी करना (scribble) , चित्र बनाना, लेखन कार्य करना, कट-एंड-पेस्ट करना, मोहर लगाना जैसे कार्य कर सकें और इसके अलावा विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करते हुए प्रिंट से जुड़ सके।
- **वर्ड स्टडी कॉर्नर** (शब्द-अध्ययन के कोने) में, बच्चों को शब्द बनाने और तोड़ने एवं ध्वनि और प्रतीकों के संबंधों के बारे में सोचने के लिए सामग्री और अवसर मिलते हैं। अगर कक्षा में जगह की कमी है तो आप इसे लेखन कोने के साथ भी जोड़ सकते हैं |



चित्रा 5. यह एक दैनिक उपस्थिति चार्ट की एक तस्वीर है। बच्चों ने अभी तक अपना नाम लिखना नहीं सीखा है, लेकिन वे इसे पहचानने में सक्षम हैं और इसके सामने हस्ताक्षर करते हैं जैसे कि डॉट्स, क्रॉस या उनके नाम का पहला अक्षर। कमला निंबकरबालभवन, प्रगति शिक्षण संस्थान, फलटन, महाराष्ट्र।

कभी-कभी, शिक्षक कक्षा में एक प्रिंट- समृद्ध माहौल तो बनाते हैं, लेकिन इसे सार्थक ढंग से उपयोग करना भूल जाते हैं। एक प्रिंट- समृद्ध माहौल का मतलब प्रिंट का सजावटी प्रदर्शन नहीं है। यदि बच्चों को इसके साथ सार्थक ढंग से जुड़ना है और इनसे सीखना है तो प्रिंट का सार्थक ढंग से उपयोग करना होगा। आइए शुरुआत में दिए गए इस शब्दचित्र को याद करें: शिक्षक ने कक्षा के दिनचर्या में लेबल या लिखित निर्देशों का उपयोग शामिल किया ((बच्चे अपने बैग के लिए स्थान की पहचान करते हैं और हर दिन उसी जगह पर अपना बैग रखते हैं)। आप कक्षा के प्रिंट के साथ छात्रों को जोड़कर रखने के लिए इसी तरह के विभिन्न तरीकों को सोच सकते हैं।

[4] प्रिंट समृद्ध वातावरण पर आधारित सारपत्र में प्रत्येक कोने के लिए आवश्यक सामग्री और गतिविधियाँ सुझाई गई है.

प्रिंट सामग्रियों का प्रदर्शन बच्चों की आँख के स्तर पर और उनके पहुंच में रखना सबसे अच्छा तरीका है। प्रिंट सामग्रियों को कक्षागत गतिविधियों के अनुसार बदलते रहें और ऐसे व्यवस्थित करके रखें कि बच्चे उन प्रिंट से संबंधित प्रतिक्रिया दे पाएँ । इसका अर्थ है छात्रों की सीखने की ज़रूरतों और प्रगति के अनुसार नियमित रूप से प्रदर्शन को बदलना या अपडेट करना।

इमर्जेंट रीडिंग के लिए अवसर प्रदान करना

हममें से कई लोगों ने बच्चों को किताबें पढ़ने की नक़ल (pretend reading) करते हुए देखा होगा, भले ही उन्हें अक्षर या शब्द पढ़ना नहीं आता हो। वे क्या कर रहे हैं? शायद वे चित्रों को देख रहे हैं और उनको समझने की कोशिश कर रहे हैं। शायद वे पन्ने पलटते हुए एवं पढ़ते समय अपनी उंगलियाँ प्रिंट पर रखते हुए अपने आसपास के वयस्कों की नकल करने की कोशिश कर रहे हैं जैसे शायद उनको एक वयस्क द्वारा सुनाई गई एक किताब का मुखर वाचन याद हहै और उसी कहानी को याद करके सुना रहे हैं। या शायद वे वास्तव में कुछ शब्दों को पढ़ना सीख गए हैं और प्रिंट के अभिप्रायों पर ध्यान देने लगे हैं ।

बच्चों के पारंपरिक रूप से पढ़ना सीखने से पहले प्रिंट और किताबों के साथ उनके प्रदर्शित व्यवहार की श्रृंखला को इमर्जेंट रीडिंग कहते है। प्रिंट और किताबों के सतत संपर्क से एवं वयस्कों और आसपास के बच्चों, जो प्रिंट का उपयोग करते हैं, के साथ निरंतर बातचीत से, बच्चे पढ़ने की प्रक्रिया के बारे में उपयोगी चीज़ों को सीखते हैं। प्रिंट के प्रति जागरूकता, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, सीखने का एक हिस्सा है, लेकिन इसके अन्य पहलू भी हैं।

शुरुआत में, बच्चे किताबों को पढ़ने की नक़ल करते समय (pretending reading), केवल एक-एक चित्र पर ध्यान दे सकते हैं। धीरे-धीरे, वे समझने लगते हैं कि चित्र एक दूसरे से संबंधित हैं और वे चित्रों से एक कहानी बुनने की कोशिश करने लगते हैं।सहयोग करने वाले वयस्कों और साथियों की उपस्थिति में किताबों के साथ अर्थपूर्ण बातचीत से, बच्चे धीरे-धीरे यह समझने लगते हैं कि कहानी चित्रों और पाठ को एक साथ पढ़ने में निहित है। यह एक नई समझ है।

यदि बच्चे के आसपास के वयस्क उन्हें कहानियां सुनाते हैं और किताबें पढ़कर सुनाते हैं तो वे यह भी जान लेंगे कि कहानियों में अनुमान लगाने योग्य संरचना होती है- जैसे उसमें शुरुआत, मध्य और अंत है। उसे यह भी पता चल जायेगा है कि कहानियों में हमेशा कुछ पात्र और उनके कुछ क्रियाकलाप होते हैं। घर और स्कूल में वयस्कों द्वारा बार-बार मौखिक रूप से कहानी सुनाने और मुखर वाचन करने से, वह स्वयं से कहानियाँ गढ़ना/ बुनना शुरू कर देते हैं ।

कक्षा में इमर्जेंट रीडिंग का समर्थन करना

बच्चों में ध्वनि जागरूकता बढ़ाने के लिए खेल: इससे पहले ही कि बच्चे अलग-अलग ध्वनियों को व्यक्त करने वाले अक्षरों को सीखें, यह ज़रुरी है कि उन्हें यह पता हो कि ध्वनियाँ बोली जाने वाली भाषा में कैसे काम करती हैं। आप उनके इस ध्वनि जागरूकता[5] को बढ़ने के लिए उनके साथ कई तरह के जल्दी से खेले जाने वाले दिलचस्प खेल खेल सकते हैं या कविताओं और तुकबंदी का मौखिक पाठ पढ़ सकते हैं।

कक्षा के प्रिंट सामग्री के साथ जोड़ना : जैसा कि हमने पहले चर्चा की है, अपने छात्रों को कक्षा के प्रिंट सामग्री के साथ जोड़ें, जैसे लेबल की ओर इशारा करके; कविताओं और कहानियों को पढ़कर; उनके अपने काम (रचनाओं) के प्रदर्शन (डिस्प्ले) से जोड़ कर ,शब्दों वाली दीवार और चित्र-शब्दकोश पर शब्दों के साथ दिलचस्प खेल खेलकर [6]। इस बारे में चिंता न करें कि बच्चे वास्तव में अक्षर या शब्द पढ़ रहे हैं या नहीं। उन्हें स्मृति या दृश्य के आधार पर पढ़ने दें। समय के साथ, वे शब्दों और अक्षरों पर ध्यान देने लगेंगे।

शेयर्ड रीडिंग (साझा पठन)

एक बड़ी किताब, या बड़े अक्षर और चित्रों वाली एक कहानी या कविता का पोस्टर चुने। कुछ दिनों तक , एक पाठ को कई बार पढ़ें, और पढ़ते समय पाठ के एक-एक शब्द पर उँगली या छड़ी फिराएँ। देखें 6 चित्र) बच्चे शिक्षिका के साथ-साथ पढ़ते हैं और जहाँ कहीं भी वे पढ़ सकते हैं पढ़ने में उनके साथ जुड़ जाते है इससे | उन्हें प्रिंट सामग्री की अवधारणाओं को समझने में मदद मिलती है जैसे दिशात्मकता, पृष्ठों को कैसे पलटना है और कैसे चित्रों और प्रिंट को एक साथ पढ़ना है। पाठ के बाद की रीडिंग में आप शब्दों, अक्षरों या विराम चिह्न की विशिष्ट लक्षण / खूबियों को बता सकते हैं।



चित्र 6. बड़ी बुक द्वारा साझा पठन QUEST, महाराष्ट्र

5 इस अवधारणा पर एवं इसमें सहायक अन्य कई तरीकों पर अधिक जानकारी के लिए ELI सारपत्र *पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में ध्वनि जागरूकता को सहारा* देखें http://eli.tiss.edu/handouts-publications/

6 प्रिंट समृद्ध वातावरण पर आधारित ELIसारपत्र में बच्चो को कक्षा के प्रिंट से जोड़ने के लिए कई सुझाव दिए गए हैं

रोज़ाना मुखर वाचन: बच्चे प्रिंट के बारे में सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब वे वास्तविक और प्रामाणिक संदर्भों में पढ़ और लिख रहे होते हैं (क्ले, 1991)। अच्छी किताबों के मुखर वाचन में भागीदारी एक ऐसा ही सशक्त अनुभव है । इससे साक्षरता सीखने के सभी पहलुओं में लाभ मिलता है। लेकिन, सबसे बुनियादी स्तर पर, यह बच्चों को बताता है की प्रिंट सामग्री किस प्रकार बोली जाने वाली भाषा को व्यक्त करती है, पुस्तक को कैसे पकड़ना (handle)है, और कैसे एक लंबे और परस्पर जुड़े हुए पाठ का अर्थ निकालना है। और यह सब एक जोशपूर्ण और सुखद वातावरण में होता है। इसलिए हर दिन अपने छात्रों के साथ मुखर वाचन करने की कोशिश करें। विविध प्रकार की किताबों का प्रयोग करें –इससे उन्हें प्रिंट के माध्यम से अर्थ संप्रेषित करने के विभिन्न तरीकों को देखने में मदद मिलेगी।

चित्र पढ़ना: बच्चों को चित्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बहुत सारी दिलचस्प क्रियाओं वाली एकल तस्वीरें बच्चों को कहानियों की रचना करने में मदद कर सकती हैं। लेकिन बच्चों को बिना शब्द वाले चित्र-किताबें (पिक्चर बुक) देना भी महत्वपूर्ण हैं जिनमें बहुत सारी क्रियाओं को एक क्रम में दिखाया लेकिन बच्चों को शब्द रहित-चित्र पुस्तकें जिन-चित्रमें क्रियाओं को एक क्रम में दिखाया गया हो, क्योंकि इनसे उन्हें पढ़ते समय कहानी बुनने में मदद मिलती है।

पढ़ने का कोना या कक्षा पुस्तकालय: छात्रों को पढ़ने के कोने में अपनी पसंद की पुस्तकों की स्वतंत्रतापूर्वक छानबीन करने और उन्हें उलट-पुलट कर देखने की अनुमति दें। उन पुस्तकों को कक्षा पुस्तकालय में शामिल करना न भूलें जिनका आपने कक्षा में मुखर वाचन किया है। बच्चों को चित्र देखने सवाल पूछने , मुखर वाचन में इस्तेमाल की गई उनकी पसंदीदा कहानियों को अपने शब्दों मे कहने तथा उन किताबों के बारे में कुछ लिखने या चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

शब्द कार्ड : इनमें शब्द और उनके चित्र शामिल है जैसा कि हमने पहले कहा है कि भले ही बच्चे शब्दों को डिकोड न कर पाएं, पर वे चित्रों को देखकर शब्दों के नामों का अंदाज़ा लगा लेंगे। आप इन कार्ड्स का उपयोग करके शब्द खेल खेल सकते हैं। उदाहरण के लिए छात्रों को प्रथम या अंतिम ध्वनि के आधार पर कार्ड्स को छंटने के लिए कहें । बाद में, जब आप अक्षरों से परिचय कराते हैं तो उनमें से कुछ अक्षरों को फर्श पर विभिन्न स्थानों पर लिखें; छात्रों से प्रत्येक कार्ड पर लिखे शब्द या चित्र का नाम बताने के लिए कहें और उसे प्रथम अक्षर (या अंत या मध्य) के लिए सही स्थान पर रखने के लिए कहें।इन कार्ड्स को ऐसी जगह लगाएं जो बच्चों के पहुँच में हो (जैसे शब्द-दीवार) और बच्चों को पढ़ते या लिखते समय इन्हें देखने के लिए प्रोत्साहित करें ।

अक्षर कार्ड के साथ खेल खेलना : कुछ कार्ड्स बनाएँ जिनमें से प्रत्येक कार्ड पर एक अक्षर लिखा हो, और अक्षर प्रतीक एवं उसकी ध्वनि पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अक्षर खेल खेलें। प्रारंभिक साक्षरता संवर्धन संगठन (Organisation for Early Literacy Promotion) इस सीख को सुदृढ़ करने के लिए अक्षरों की एक रेल बनाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करता है । जब बच्चे एक नया अक्षर सीखते हैं, तो उस अक्षर से शुरू होने वाले जितने शब्द उन्हें आते हैं उनके चित्र बनाते हैं। जैसे क की रेल में कप, कटोरी, कैंची कबूतर कंघी (देखें चित्र 7) । यदि बच्चे चाहें, तो वे चित्रों के सामने चीज़ों के नाम लिखने की कोशिश भी कर सकते हैं (इमर्जेंट राइटिंग, अगला भाग देखें) या वे इसके लिए चित्र-शब्दकोषों या शब्दों वाली दीवारों को देख सकते हैं।



चित्र 7 बच्चा क की रेल बनाते हुए. OELP, राज्यस्थान

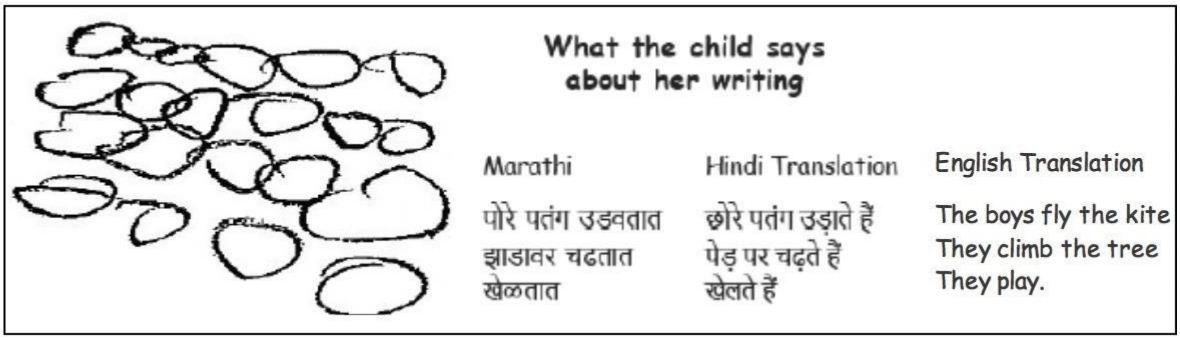
इमर्जेंट राइटिंग के लिए अवसर प्रदान करना
जिस तरह बच्चे पारंपरिक रूप से पढ़ने से पहले पढ़ने की नक़ल (pretend reading) करते हैं, ठीक उसी तरह वे भी पारंपरिक रूप से लिखना शुरू करने से पहले विभिन्न प्रकार के emergent writing के व्यवहारों में संलग्न होते है |

छोटे बच्चों का लेखन उनकी बातों, ड्राइंग, पढ़ने और नक़ल वाले खेल (Pretend-play) से जुड़ा होता है: नन्हें लेखकों के साथ किये गए व्यापक काम के आधार पर, एन डायसन (1988) ने गौर किया कि जब छोटे बच्चे पहले- पहल लिखना शुरू करते हैं तब वे हावभाव, बातचीत, ड्राइंग और स्क्रिबलिंग को एक साथ मिलाते हैं । वे एक खिलौना ट्रक उठा सकते हैं, इसे "व्रूम, व्रूम, बीप, बीप, बीप" आवाज़ें निकालते हुए, ज़मीन पर ट्रक को टेढ़े-मेढ़े खींचते हैं। वे अपने दोस्त को ट्रक के बारे में एक जटिल कहानी भी सुना सकते हैं, और अंत में जो वे बताना चाह रहे हैं उनके केवल एक छोटे से हिस्से को व्यक्त करते हुए कागज़ पर कुछ निशान बना सकते हैं।

इसी तरह, वे "स्क्रिबल" लिखते हैं। वयस्कों के लिए संभवतः उसका कोई अर्थ न हो, लेकिन जब आप उनसे उनके स्क्रिबल्स के बारे में पूछेंगे, तो उनके पास कहने के लिए बहुत कुछ होता है । समय के साथ वे अपनी ड्राइंग से मिलाते हुए अक्षरनुमा आकृतियाँ बनाने लगते हैं |[7]

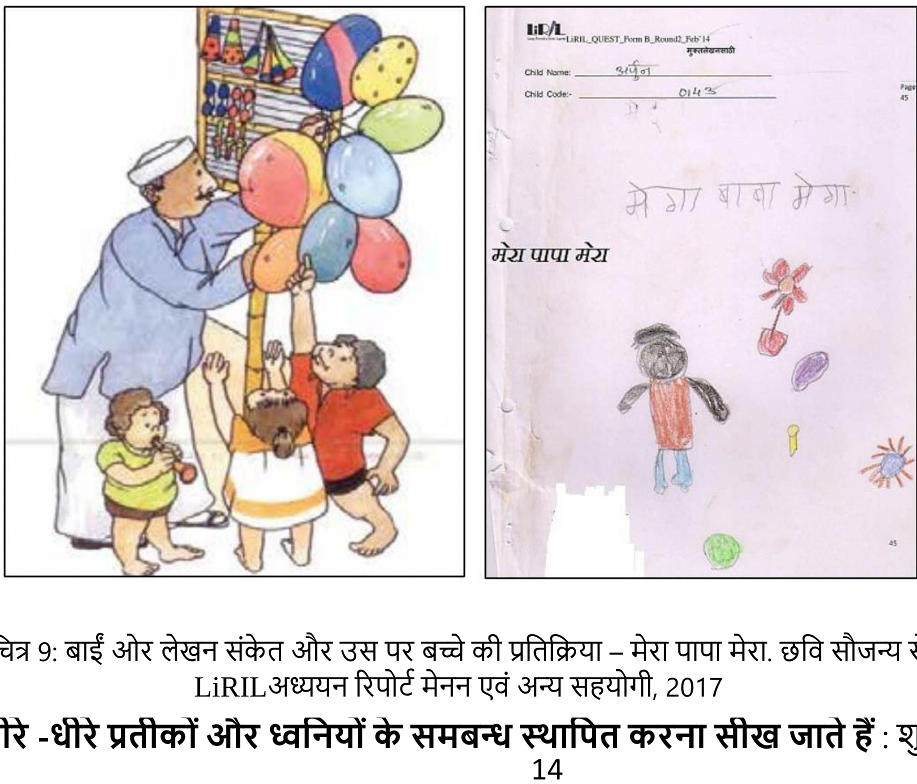
7 भारतीय भाषाओं में इमर्जेंट लेखन के चरणों के लिए ELI ब्लॉग में *बच्चों का लेखन: उद्भव और महत्व* देखें. आप इसे यहां से प्राप्त कर सकते हैं :http://eli.tiss.edu/childrens-writing-how-does-it-emerge-and-why-is-thign-significant/

यह पहला महत्वपूर्ण चरण है बच्चों को एक वयस्क की तरह पारंपरिक ढंग से लिखने में निपुण होने में वर्षों लग सकते हैं। हालाँकि,यह महत्वपूर्ण है कि आप बच्चों के लेखन की शुरुआती प्रयासों के प्रति सजग हो और उनकी सहायता करें ।



चित्रा 8. ग्रेड 1 की शुरुआत में एक बच्चे द्वारा बनाये गए बेतरतीब आकृतियों का स्क्रिबलिंग , और अपने चित्रों के बारे में जो उसने कहा उसे शोधकर्ताओं द्वारा लिप्यान्तरण कर हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत. छवि सौजन्य :LiRIL अध्ययन रिपोर्ट, मेनन और अन्य सहयोगी, 2017

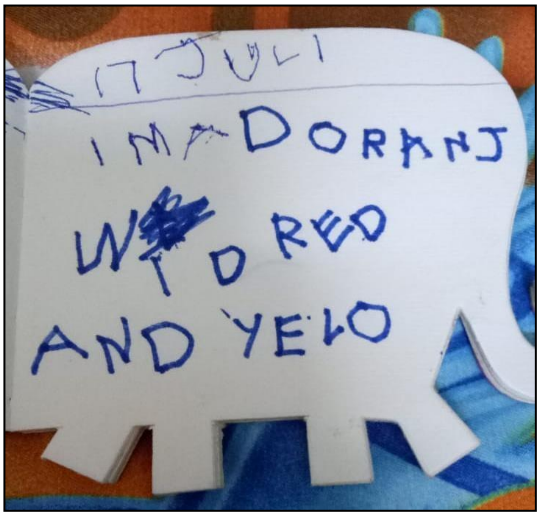
बच्चे भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण विषयों के बारे में लिखते हैं: यदि आप अपनी कक्षा में लिखने के लिए विभिन्न विषय प्रदान करते हैं, तो आपने देखा होगा, कि छोटे बच्चे अक्सर विषय से हटकर, उन विषयों के बारे में लिखते हैं जो उनके लिए भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है । LiRIL अध्ययन (मेनन एवं सहयोगी, 2017) में, जब बच्चों को गुब्बारे-विक्रेता के बारे में लिखने या चित्र बनाने को कहा गया तो एक बच्चे ने अपने पिता का चित्र बनाया| (चित्र 9 देखें)। ध्यान दें कि बच्चे ने चित्र को कैसे लेबल किया है: "मेरा पापा मेरा"। यद्यपि वह विषय से बाहर चला गया था, पर वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए स्पष्ट रूप से प्रिंट का उपयोग कर रहा था। बच्चों के ऐसे प्रयासों को अनुमति दी जानी चाहिए; अन्यथा, हो सकता है बच्चों को लिखना प्रासंगिक न लगे और वे लिखने के लिए बिलकुल अनिच्छुक भी हो जाएं ।



चित्र 9: बाईं ओर लेखन संकेत और उस पर बच्चे की प्रतिक्रिया – मेरा पापा मेरा. छवि सौजन्य से LiRILअध्ययन रिपोर्ट मेनन एवं अन्य सहयोगी, 2017

बच्चे धीरे -धीरे प्रतीकों और ध्वनियों के समबन्ध स्थापित करना सीख जाते हैं : शुरुआत में, बच्चे यह नहीं

समझ पाते है कि अक्षर बोली जाने वाली ध्वनियों का प्रतीक है । हालाँकि इस प्रतीक-ध्वनि सम्बन्ध को समझना साक्षरता के विकास के लिए बहुत ज़रूरी है और बच्चों का इस ओर ध्यान खींचने के कई रोचक तरीके हैं। निर्देश देने और अवसर प्रदान करने से जब बच्चे इस सम्बन्ध को एक बार पहचानना शुरू कर देते हैं तो वे शब्दों की वर्तनी बनाने में इस ज्ञान का इस्तेमाल करने लगते हैं । .



चित्र 10- अपने सन्देश को बताने के लिए 4 वर्षीय बालक द्वारा इनवेंटेड स्पेलिंग (गढ़ी हुई वर्तनी) का प्रयोग -मैंने लाल और पीले रंगों से एक संतरा बनाया। चित्र सौजन्य पूर्वा अग्रवाल.

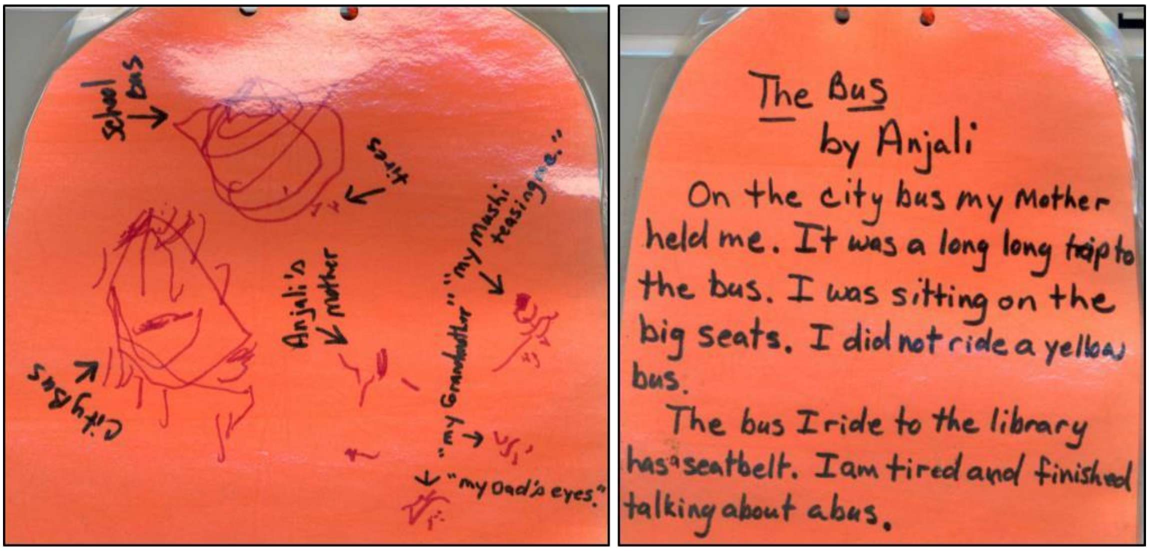
उनकी शुरूआती वर्तनियाँ पारंपरिक लेखन के लिहाज़ से गलत हो सकती है। लेकिन उनकी गढ़ी हुई वर्तनी दिखाती है कि उन्होंने ध्वनियों और प्रतीकों के सम्बन्ध को समझने की कोशिश की है। । चित्र 10 में, एक चार वर्षीय बालक MADE के लिए MAD ,ORANGE के लिए ORANJ ,WITH के लिए WID और YELLOW के लिए YELO लिखता है- अपने सन्देश में निहित ध्वनियों को लिखने की कितनी अक्लमंद कोशिश है! यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप उनके शुरूआती लिखने के प्रयास में केवल वर्तनी ठीक करने के बजाय उन्हें प्रोत्साहित करें। इससे लेखन के बारे में उनकी बुनियादी समझ को और मज़बूत करने में मदद मिलेगी।

कक्षाओं में इमर्जेंट लेखन को बढ़ावा देना

बच्चों को इमर्जेंट दौर /फेज़ में (और उसके आगे) बार-बार और स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की ज़रूरत होती है। सुनिश्चित करें कि आप बच्चों को उनके सार्थक विषयों के बारे में लिखने के लिए अनेक अवसर देते हैं ,और लेखन में उनके प्रयासों के लिए उनकी मदद करते हैं।

हम कुछ तरीकों पर चर्चा करते है जिनका आप अपनी कक्षा में इस्तेमाल कर सकते हैं।[8] यद्यपि हमने इन गतिविधियों को अलग अलग सेक्शन में प्रस्तुत किए हैं ,ये पढ़ने और लिखने में लाभदायक है क्योंकि ये दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं और वे इसी तरह विकसित होते हैं।

चित्र बनाने , scribble करने (गोदागादी करने),लिखने और बात करने के अवसर देना : बच्चों को स्कूल के पहले दिन से ही खाली पेपर दें और उन्हें चित्र बनाने और लिखने के लिए कहें। आप उन्हें घर, परिवेश,परिवार, आपके द्वारा साझा की गई कहानी पर उनकी प्रतिक्रिया या एक अनुभव जो उन्होंने एक साथ कक्षा के रूप में साझा किया है आदि के बारे में चित्र बनाने या लिखने के लिए कह सकते है। उन्हें आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचने का (Scribble) मन है तो उन्हें ऐसा करने दें या वे चित्र बनाना चाहते हैं तो चित्र बनाने दें। बच्चे एक बार जब दिए हुए काम को कर लेते हैं तो उनसे पूछें कि क्या लिखा है। वे जो कुछ भी कहते हैं उसे अलग से लिख ले और कक्षा में उनके चित्र के साथ इस बोलकर लिखवाई गई बात को प्रदर्शित कर दें। (चित्र 11 और 12 देखें) शिक्षक द्वारा लिखे गए इस तरह के उदाहरण को उस बच्चे को सुना सकते है और अन्य सभी बच्चों को भी सुना सकते हैं। यह आपके छात्रों को समझने में मदद करेगा कि उनके लिखे हुए काम को मान मिला है और उनके लिखे हुए काम को दूसरे भी पढ़ सकते हैं |



एक तीन वर्षीय बच्चे के इमर्जेंट लेखन के प्रयास और शिक्षक के नोट्स में उनके लिखे हुए काम के बारे में जैसा बच्चे ने बताया वैसे ही शिक्षक ने रिकॉर्ड किया । चित्र सौजन्य: शैलजा मेनन

कक्षा के प्रिंट पर काम करना: कक्षा की दिनचर्या के रूप में बच्चे अपने उपस्थिति चार्ट पर अपने नाम के आगे हस्ताक्षर कर सकते हैं (देखें चित्र 5) या कक्षा के किसी काम में स्वेच्छा से शामिल होने के लिए या कक्षा में प्रदर्शित सर्वे में हिस्सा लेने के लिए लिखकर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं ।[9]

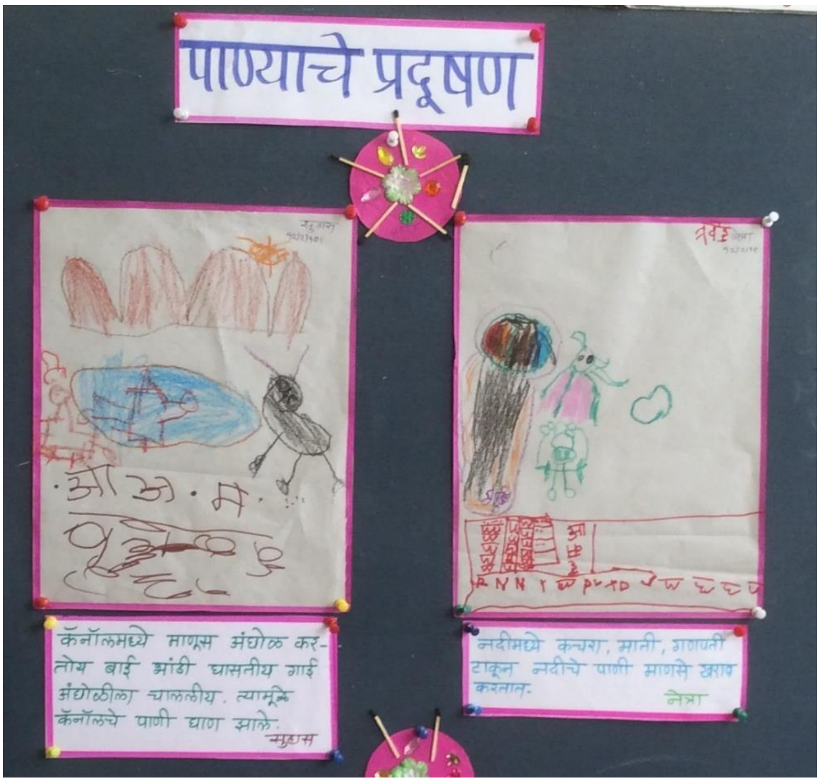
---

8 हम यहाँ केवल कुछ तरीकों को प्रस्तुत करते है। ELI सारपत्र ***प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के लेखन को सहारा*** में लिखने सिखाने के सिद्धांतों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है एवं विस्तृत सुझाव भी दिया गया है कि जिनका इस्तेमाल शिक्षक बच्चो को लेखन के दौरान मदद करने में कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें - http://eli.tiss.edu/handoutspublications/

9 इसके उदाहरण सारपत्र *कक्षा में प्रिंट समृद्ध माहौल बनाना* में दिया हुआ है।

लेखन का मॉडलिंग एवं साझा लेखन : कक्षा की साझा अनुभव या कक्षा भ्रमण (पिकनिक) पर आप और बच्चे मिलकर एक पाठ बना सकते हैं। आप इसे कक्षा के लिए चार्ट पेपर पर लिख सकते हैं। ऐसा करके आप मॉडलिंग करते है कि कैसे वे अपने अनुभव और विचारों को वर्णन करते हुए पाठ की रचना कर सकते हैं एवं उन्हें लिख सकते हैं। लिखकर दिखाना (मॉडल्ड राइटिंग) पाठ्य के विशेषताओं और परिपाटियों के उपयोग के तरफ ध्यान खींचने के लिए बढ़िया समय है। चार्ट को कक्षा में टांगें और सह पठन के लिए बार-बार इसका उपयोग करें। जैसे आप पाठ को एक साथ बार-बार पढ़ते हैं तो बच्चे कई चीज़ें सीखेंगे जैसे प्रिंट कैसे काम करता है और कैसे लिखा जाता है। आगे आने वाले सत्रों में जब आप लिखते है तब आप बच्चों को शब्द,वाक्यांश ,विराम चिह्न जोड़ने के लिए प्रोत्साहित कर साझा लेखन में शामिल कर सकते हैं।

लेखन के विभिन्न विधाओं की उपलब्धता और उनसे सतत संपर्क -समय समय पर बच्चों को विभिन्न प्रकार की किताबें पढ़कर सुनाएँ और उन्हें विभिन्न शैलियों(विधाओं) में लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। किसी दिन वे अपने गांव में मनाए जाने वाले पर्व की वर्णनात्मक कहानी लिख सकते हैं। किसी अन्य दिन आप दिखा सकते हैं कि मित्र को उसकी प्रशंसा करते हुए पत्र कैसे लिखा जाए । तीसरे अवसर पर आप बच्चों को कक्षा के लिए नियम बनाने में मदद कर सकते हैं या उसकी पहली कविता को बनाने में मदद कर सकते हैं। इस दौरान याद रखे कि समय के साथ ही लेखन परंपरागत होती है । जब बच्चे लिखते हैं तो उन्हें चित्रकारी ,स्क्रिबलिंग, बात करने दें और खुद की गढ़ी हुई वर्तनी (इनवेंटेड स्पेलिंग) का इस्तेमाल करने दें। ऐसी उम्मीद न करें कि उनकी लिखावट आपकी लिखावट जैसी दिखेगी । उनकी ज़रूरत के आधार पर ऐसे तमाम अभ्यासों में उनका साथ दें।



चित्र 12 एक शिक्षक द्वारा लेखन के बारे में छात्रों के कथन को रिकॉर्ड करने और प्रदर्शन करने का एक और उदाहरण। कमला निंबकर बाल भवन ,प्रगति शिक्षण संस्थान ,फल्टन महाराष्ट्र।

अक्षर पढ़ाने में विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का प्रयोग: जिस तरह से बच्चे धीरे-धीरे स्क्रिप्ट सीखते हैं, आप बच्चों को अक्षरों के आकार सिखाने के लिए तरह तरह की गतिविधियों और वस्तुओं का प्रयोग कर सकते हैं। आप उन्हें अक्षरों के आकार को समझाने के लिए मिट्टी ,रेत ,पानी और हवा में उँगली फिराने के लिए कह सकते है। या पत्थरों और मूंगफली के छिलकों से अक्षरों की आकृति बनवा सकते हैं। राइटिंग कार्नर में इन सामग्रियों को स्टेशनरी के साथ रख सकते है।

लिखे गए काम के बारे में बातचीत: शुरुआत से ही बच्चों से उनके द्वारा लिखे गए या बनाये गए चित्र पर बातचीत करते रहें । यदि बच्चे ने अपने मौखिक कथन का केवल एक हिस्सा ही चित्रित किया है या लिखा है तो आप उनके बताये अनुसार उनकी कहानियों को लिख सकते हैं।

बच्चों के काम को साझा करना : हमें अलग-अलग तरीकों को शामिल करना चाहिए, जिसमें बच्चे अपने अपने कार्यों को दूसरों से साझा कर सकें - सॉफ्ट बोर्ड पर उनके काम को लगाना, उसे कक्षा में अपने काम के बारे में बताने के लिए या दिखाने के लिए सामने बुलाना या अपने काम को माता-पिता और समुदाय के साथ साझा करना आदि।

लिखे कामों का फ़ोल्डर बनाना - प्रत्येक बच्चे का अपना लेखन फ़ोल्डर होना चाहिए जिसमें उसके वर्षों के लिखित कार्य एकत्रित हों ।यह रिकॉर्ड रखने में , माता पिता के साथ साझा करने में और इसके साथ छात्र के सीखने की प्रगति को भी ट्रैक करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर ,हमें इमेर्जेंट लिटरेसी परिप्रेक्ष्य की धारणाओं पर फिर से देखना चाहिए। दरअसल, बच्चे बहुत कम उम्र से ही अपने वातावरण से प्रिंट के बारे में समझने लगते हैं। लेकिन ऐसा तभी होता है जब वे ऐसी सार्थक गतिवधियों से जुड़े रहते हैं जिनमें अर्थपूर्ण तरीके से प्रिंट और दूसरे माध्यम भी होते हैं।

मध्यवर्गीय समुदाय में, यह अवसर बच्चों को स्कूल आने से पहले घर पर मिलता है। यह महत्वपूर्ण है कि ऐसे बच्चों को भी उनके इमर्जेंट साक्षरता के लिए कक्षा की भी सहायता मिलती रहे । हालाँकि, जब बच्चे निम्न – साक्षरता वाले घरों से आते हैं, तो यह और ज़्यादा महत्वपूर्ण और ज़रूरी हो जाता है कि कक्षाएँ बच्चों को ऐसे सन्दर्भ को प्रदान करती हो जिसमें वे पारंपरिक रूप से पढ़ना और लिखना सीखने के रवैये, ज्ञान और कौशलों का विकास कर सकें ।

इस सारपत्र में ऐसे अवसर देने के लिए तीन तरह के तरीकों पर चर्चा की गई है

- एक सार्थक प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाकर,
- इमर्जेंट पठन और लेखन के लिए अवसर प्रदान कर,
- एक जीवंत इमर्जेंट लिटरेसी वाली कक्षा बनाकर ।

हमें उम्मीद है कि अपनी कक्षा के लिए इमर्जेंट लिटरेसी आधारित पाठ्यचर्या बनाने में आप इन तरीकों का प्रयोग करेंगे ।

References

Clay, M. M. (1991). *Becoming literate: The construction of inner control*. Portsmouth, N. H.: Heinemann.

Clay, M. M. (2000). *Concepts about print: What have children learned about the way we print language?* Portsmouth, N.H.: Heinemann.

Dyson, A. H. (1988). *Drawing, talking, and writing: Rethinking writing development.* [Occasional Paper No. 3]. Berkeley, CA: Center for the Study of Writing, University of California. Retrieved from https://eric.ed.gov/?id=ED292121

Menon, S., Krishnamurthy, R., Sajitha, S., Apte, N., Basargekar, A., Subramaniam, S., & Modugala, M. (2017). *Literacy Research in Indian Languages (LiRIL): Key findings of a study of literacy acquisition in Kannada and Marathi.* Azim Premji University.

Subramaniam, S., Menon, S., & Sajitha S. (2017). *LiRIL teacher's guide—Children's Writing*. Azim Premji University. Retrieved from: http://eli.tiss.edu/?page_id=3344

Authors: Shuchi Sinha, Akhila Pydah and Shailaja Menon

Conceptual Support and Editing: Shailaja Menon
Copy-editing: Chetana Divya Vasudev
Design & Layout: Harshita V. Das